

1, 188. दर्शनात्प्रलोचन KATHÁS. 9, 46. BHARTṚ. 3, 97. शृङ्गारस्य (रेण) कृ-
रिस्तुतः VOP. 5, 25. आत्मं der sich selbst genügt BHAG. 3, 17. मुखं तृप्त-
म् vergnügt AIR. Ba. 1, 25. Accent eines mit तृप्त anlautenden und auf
ein partic. auf त् auslautenden comp. gaṇa मुखदि zu P. 6, 2, 170. —
2) sättigen, laben: पितृनात्पत्नीर्निर्पूरकतेयैः BHATT. 2, 52. 1, 2. न तृप्नो-
ति पितरं पुत्रः erfrent DURGĀD. im ÇKDR. — 3) तर्पति anzünden (das Feuer
sättigen; vgl. तर्पण) DHĀTUR. 34, 13. — caus. 1) sättigen, laben; befriedigen;
act. und med.: अतृप्यन्ते च वेतालम् — तर्पयिष्यन् KATHÁS. 26, 237. तर्पयिष्ये
त्वाम् MBH. 12, 5542. तर्पयामो (sic) च कामतः R. 2, 1, 3. विश्वामित्रबलम् —
वसिष्ठेन सूतर्पितम् 1, 33, 5. वृष्टिर्भित्तर्पयन्तं सरस्वतम् RV. 1, 164, 52.
आपः पृथिवीं तर्पयन्तु AV. 4, 13, 1. तर्पयन्निव महो किरणाग्नेः VARĀH. BṚH.
S. 12, 22. पञ्चोदात्ता दातारं तृप्त्या तर्पयति AV. 9, 5, 9. सुन्नितीस्तर्पयेद्याम्
RV. 7, 64, 4. VS. 6, 30, 31. AIR. Ba. 8, 24. पं वा सोमेनातीतृप्त्याम् VS. 7, 29.
AV. 2, 29, 6. 4, 26, 6. यथा धेनुं तीर्थं तर्पयति TBa. 2, 1, 8, 3. ÇAT. Br. 1, 7,
3, 28. 9, 2, 3, 3. 11, 5, 6, 4. भूरिणा हृदिरेण वै । अस्किप्रयं तर्पयिष्ये धात-
रं मे BHĀG. P. 7, 2, 8. सततं बाह्यधाराभिर्दि तर्पयसे ऽनलम् MBH. 1, 8126.
मानुष्यो बलवान्गन्धो घ्राणं तर्पयतीव मे 5936. पितृनाचायीश्व तर्पयेयुः PĀR.
GRH. 2, 12. यदेव तर्पयत्यग्निः पितृन् M. 3, 283, 6, 24. MBH. 3, 1734. R. 1, 2,
11, 44, 42. 62, 12. BHĀG. P. 3, 3, 26. ब्राह्मणांश्च सुतर्पयन् । मुनींश्च ब्रह्मचर्येण
देवान्यग्नेरनेकधा HARIV. 15373. देवांस्तर्पयानो (sic) विधनिः MBH. 14, 291.
तर्प्य देवान्पितृन् 3, 5019. 13, 1409. ते संयानगतिर्द्वैर्वापिज्ञो हूरगामिनः ।
हरितं तर्पयत्येकं यथैव धनदं तथा ॥ HARIV. 5239. यं पञ्चवर्षतपसा भवा-
न्देवमतीतृप्तुं BHĀG. P. 4, 12, 23. स तान् — धान्येन च धनेन च । सोमात्ते
तर्पयामास विपुलेन MBH. 1, 6803. 2, 100. 3, 2720. 18, 276. VARĀH. BṚH. S.
45, 58, 66. (तौ) तर्पयस्व — गोसकृत्त्रेण R. 2, 32, 14. R. GORR. 2, 31, 32. ते-
षामहं वाग्भिस्तर्पितः MBH. 5, 7232. व्यञ्जुहि तर्पया काममेषाम् RV. 1, 54,
9, 85, 11. सा मे कामानतीतृप्तुं ÇĀṆKH. GRH. 3, 12. — 2) med. sich sät-
tigen; Befriedigung erhalten: अतीतृप्तं पितरं VS. 19, 36. अयं वज्रस्त-
र्पयतामृतस्य AV. 6, 134, 1. — 3) act. anzünden (das Feuer sättigen; vgl. तर्-
पण) DHĀTUR. 34, 13. — desid. sich zu sättigen verlangen an (acc.):
पीयूषमग्ने यत्मस्तिष्मत्सु RV. 10, 87, 17. — desid. vom caus. zu sät-
tigen —, zu laben —, zu befriedigen verlangen: यो तितर्पयिष्येत्कां चिदे-
वताम् ÇĀṆKH. GRH. 1, 2. GORR. 1, 9, 2. — Vgl. तृप्ति.
— अति satt werden, sich sättigen: त्वया संकथ्यमानेन मद्दिक्षा सात्वतो
पतेः । नातितृप्यति मे चित्तम् BHĀG. P. 8, 5, 13.
— अनु satt werden, sich laben nach Jmd (abl.): ब्राह्मणेभ्यो ऽनुत्पृ-
त्ते पितरो देवतास्तथा MBH. 13, 1922.
— अय caus. aushungern, fasten lassen Suçr. 2, 43, 1. 239, 1. — Vgl.
अपतर्पण.
— अभि sich sättigen, sich laben: अमृतेनाभितृप्तस्य MBH. 5, 3604. सौ-
शील्यगुणाभितृप्त BHĀG. P. 3, 5, 1. — caus. sättigen, laben, erquicken:
कालोपपन्नेन तदा स्वाहनेनाभ्यतर्पयन् MBH. 12, 12251. विश्वामित्रबलम्
— वसिष्ठेनाभितर्पितम् R. GORR. 1, 54, 5. (आपः) पुत्रं पौत्रमभितर्पयन्तीः AV.
18, 4, 39. राजसूयाश्रमेधायां वक्षिर्येनाभितर्पितः R. 4, 4, 3. पयदिः — उर्वो
पयसाभितर्पयद्भिः VARĀH. BṚH. S. 19, 15. तैलेन त्रोतः Suçr. 2, 20, 2.
— अय s. अयतर्पण.
— आ satt —, befriedigt werden: आ यत्पुष्पं हृतो वावशानाः RV. 7,
56, 10. — caus. sättigen: अनुकामं तर्पयेद्यामिन्द्रावरुणाय आ RV. 1, 47,

3. — Vgl. आतर्पण, आतृप्य.
— नि in der Stelle: त्वं न इन्द्र ऋतुपुस्त्वानिदे नि तृप्सि RV. 8, 59, 10.
— परि vollkommen befriedigt —, zufrieden werden: परितृप्तत्वं परमा-
त्मनः ÇĀṆKH. in WIND. Sancara 142. — caus. vollkommen sättigen, —
laben: कथं तु देवा कृविषा गयेन परितर्पिताः MBH. 3, 8537. R. GORR. 1, 13, 6.
— प्र caus. sättigen, laben, stärken: प्रतर्पितपितृगण PAÑĀT. 217, 6.
सर्वान्धातृप्रतर्पयेत् Suçr. 1, 248, 1.
— वि satt —, befriedigt werden: वयं तु न वितृप्याम उतमश्लोकवि-
क्रमे BHĀG. P. 1, 1, 19. अन्याऽन्यमवितृप्ता विलोकने VID. 303. अवित्रुप्तस्य
कामानाम् R. 4, 38, 9. वीनमापो ऽपि नापश्यमवितृप्त इवातुरः BUĀG. P. 4,
6, 20. वितृप्तदृष्ट् 3, 18, 42. अवित्रुप्तदृष्ट् 2, 11. अवित्रुप्तकाम 7, 6, 13.
— सम् sich zusammen sättigen: स्वाहाकृतस्य समु तृप्णात् ऋभवः RV.
1, 110, 1. — caus. sättigen, befriedigen, erquicken, laben, erfreuen: अन्-
दुक्तः PAÑĀV. Br. 2, 16. (तान्) मूलफलैः — संतर्पयामास MBH. 3, 946. 8390.
BHATT. 12, 75. देवान् पितृन् ÇAT. Br. 1, 8, 2, 8. 4, 4, 2. 4, 2, 1, 32. 11, 4, 2,
16. M. 3, 211. MBH. 3, 8031. 6007. R. GORR. 1, 37, 9. संतर्प्य समिद्धिग्नि-
म् RAGH. 13, 45. HIT. I, 127. यावत्तः कामाः समतीतृपस्तान् AV. 12, 3, 36.
संतर्पयत्यः सर्वभूतानि नद्यः MBH. 3, 819. सुहृदश्चापि — धनेन समतर्पयत्
1, 4470. 2, 1303. कति न द्विजेशः संतर्पिताः DHĀTUR. 68, 1.
तर्पण (von तर्प) 1) adj. f. ई sättigend, labend MBH. 18, 275. Suçr. 1, 169,
9, 180, 3. 204, 19. इन्द्रियतर्पणी s. u. कुण्डलिनी und vgl. घ्राणतर्पण. —
2) m. oder n. wie es scheint eine best. Pflanze Suçr. 2, 40, 4. 16. 96, 17.
— 3) f. ई N. einer Pflanze, = गुरुस्कन्ध, श्लेष्मणा ÇĀBDAM. im ÇKDR.
— 4) n. a) das Sattwerden, Sattsein, = तृप्ति AK. 2, 9, 56. पयस्सामु (इ-
न्द्रियेषु) प्रलीनेषु तर्पणं प्राणधारणम् । भोगान्भुङ्क्ते भवान् (d. i. मनः) MBH.
14, 673. — b) das Sättigen, Laben, Befriedigen; insbes. der Götter und
Ahnen durch Libationen AK. 3, 3, 4. 2, 7, 13. H. 1302. 821. अकरोत्तस्य
(वेतालस्य) नृमासवलितर्पणम् KATHÁS. 26, 236. पितृयज्ञस्तु तर्पणम् M. 3,
70. प्राशितं पितृतर्पणम् 74. देवर्षिपितृ 2, 176. MĀRK. P. 23, 69. तर्पणं चा-
प्यकुर्वन्तीर्थाग्नेभिः MBH. 13, 4373. 3729. कुर्वति पितृणां पिण्डतर्पणम्
4388. मांसतीरौदनमधुतर्पणं स द्विवैकसाम् । करोति JĀG. 1, 46. जलं
BHĀG. P. 8, 24, 12. अर्कणां चक्रतुस्तस्याः देव्याः पुष्यधूपामितर्पणैः DEV. 13,
7. वरं das Erfreuen des Gatten BHĀG. P. 3, 1, 27. तर्पणविधि Verz. d. B. H.
No. 1143. 1146. तर्पणखण्ड Ind. St. 1, 70. das Sättigen der Augen so v. a.
das Anfüllen derselben mit Oel oder flüssigem Fette Suçr. 2, 43, 14. 323,
3. 347, 17. 20. 348, 14. 349, 4. 8. Vgl. ऋषिः. — c) proparox. Imbiss, Nah-
rung: यतर्पणमाकर्त्ति AV. 9, 6, 6. — d) die Nahrung des Feuers, Brenn-
holz H. 827.
तर्पणीय (wie eben) adj. zu sättigen, zu befriedigen: न वित्तेन तर्पणीयो
मनुष्यः KATHOP. 1, 27.
तर्पणीच्छु (तर्पण + श्छु) adj. nach Sättigung verlangend; m. Bein.
Bhīshma's ÇĀBDAR. im ÇKDR.
तर्पयितव्य (vom caus. von तर्प) adj. zu sättigen, zu laben KĀTH. 32, 1.
तर्पिन् (von तर्प oder तर्प) 1) adj. sättigend, labend. — 2) f. तर्पिणी N.
einer Pflanze, Hibiscus mutabilis (पञ्चचारिणी), ÇĀBDAR. im ÇKDR.
तर्पिलि und तर्पिलिका gaṇa कपिलकादिः vgl. तिर्पिरिक, ति-
ल्पिलिक.
तर्क (तृक्, तृष्क), तर्कति, तृष्कति = तर्प DHĀTUR. 28, 24. 25. P. 7, 1, 59,